Gyanvividha, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : PP-385-390

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 385-390
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

1. मधुसूदन शर्मा

शोधार्थी, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा.

2. डॉ. रवीन्द्र नारायण चौरसिया

पर्यवेक्षक, एसोसिएट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा.

Corresponding Author :

मधुसूदन शर्मा

शोधार्थी, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा.

अंतरिक्ष गवेषणा की यौगिक विधि

सारांश : सभ्यता के आरंभ से ही अंतरिक्ष मनुष्य के लिए आश्चर्य का विषय रहा है। जब कभी भी मनुष्य अंतरिक्ष की ओर देखता, उसके मन में अंतरिक्ष के विषय में जानने का कौतूहल जागता। ये कौतूहल ही मनुष्य को **"यथा ब्रह्मांडे तथा पिण्डे"** के निष्कर्ष पर लेकर आया। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने एक समय कहां था-**'स्वर्ग के सम्राट को जाकर खबर कर दो, रोज ही आकाश चढते आ रहे है वो।'** वास्तव में मनुष्य की जिज्ञासा ने उसे अंतरिक्ष के क्षेत्र में बहुत आगे ले आया। आज हम अंतरिक्ष गवेषणा के क्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित कर चुके है। आज स्थिति यह है कि हम अपने कुकृत्यों से अपनी धरती माँ की शरीर में विष घोल चुके है और निवास के लिए दूसरे ग्रह को खोज रहे है। प्रसिद्ध अमेरिकी उद्योगपति एलन मस्क मंगल ग्रह पर उपनिवेश स्थापित करने के लिए दिन-रात शोध कर रहे है। आज अंतरिक्ष संबंधित खोजों के लिए हमें कई प्रकार के यंत्रों की सहायता लेनी पड़ती है; जैसे- अंतरिक्ष में कृत्रिम उपग्रह को स्थापित करने के लिए उपग्रह प्रक्षेपण यान, सशक्त उपग्रह प्रक्षेपण यान, ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान, भू-समकालिक प्रक्षेपण यान इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। इन यानों की सहायता से इन कृत्रिम उपग्रहों को प्रक्षेपित करने में वित्तीय भार बहुत अधिक होता है तथा खतरा भी बहुत होता है। इन कृत्रिम उपग्रहों की सहायता से संचार व्यवस्था में क्रांति तो आई, लेकिन कभी-कभी सौर तूफान के कारण ये उपग्रह जब नष्ट होते है तो इसका मलवा अंतरिक्ष में फैल जाते है, जिस कारण अंतरिक्ष में भी मानवजन्य कचरा बढता जा रहा है। दूसरी तरफ भारतीय ज्ञान परम्परा का अवलोकन करने पर हम पाते है कि वेदांगों में से एक ज्योतिष का विकास अंतरिक्ष का अध्ययन करने के लिए हुआ था। नक्षत्रों का ज्ञान होना इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि प्राचीन भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट था। आज हम उपग्रह की सहायता से मौसम संबंधित जानकारी लोगों तक पहुंचाते है, जबकि हमारा पंचांग सदियों से मौसम की सटीक जानकारी देता रहा है। लेकिन

प्रश्न उठता है कि भारत को अंतरिक्ष का ज्ञान कैसे मिला । पुरातात्विक खोजों में आज की तरह अत्याधुनिक मशीनों का अवशेष प्राप्त नहीं हुआ है तथा अंतरिक्ष में भी प्राचीन कृत्रिम उपग्रह के मलवें प्राप्त नहीं हुए है। ऐसी स्थिति में यह जानना कठिन हो जाता है कि प्राचीन भारत में अंतरिक्ष संबंधित शोधकार्य कैसे किया जाता था ? इस प्रश्न का उत्तर हमें योगदर्शन परम्परा से प्राप्त होता है, जहां मनुष्य में निहित शक्तियों का वर्णन मिलता है, जिसके सहारे वह उन विषयों के बारे में भी जानने में सक्षम हो पाता है जिसके के लिए आज हमें अत्यधिक धन खर्च करना पड़ता है तथा अनावश्यक कचरा फैलता जा रहा है। यदि **'यथा ब्रह्मांडे तथा पिण्डे'** का सिद्धांत प्रतिफलित होता है तो हम अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी यौगिक विधि के द्वारा स्वच्छ शोध की ओर अग्रसर हो सकते है।

महत्वपूर्ण शब्दावली : अंतरिक्ष, गवेषणा, यौगिक विधि, शोध, उपग्रह इत्यादि।

अंतरिक्ष क्या है ? : अंतरिक्ष क्या है ? संस्कृत में 'अंतरिक्ष' शब्द की व्युत्पत्ति किया गया है- "अन्त:ईक्ष्यते इति अन्तरिक्षम्। वामन शिवराम आप्टे महोदय ने अपने संस्कृत-हिन्दी कोश में 'ईक्ष्' शब्द का अर्थ देखना, ताकना, आलोचना करना, अवलोकन करना, टकटकी लगाकर देखना या घूरना, ख्याल रखना, विचारना, समझना इत्यादि बताया हैं (पृ.सं. 178)।[1] इस आधार पर हम कह सकते है कि हम जहां विद्यमान है, उसके भीतर जो कुछ भी है, जिसका हम अवलोकन करते है तथा समझते है, वह सब अंतरिक्ष का विषय हैं। अंग्रेजी में अंतरिक्ष के लिए 'स्पेस (Space)' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका अर्थ होता है-'स्थान या जगह।' फादर कामिल बुल्के एक अन्य शब्द 'दिक्स्थान' का भी प्रयोग करते हैं (अंगरेजी-हिन्दी कोश पृ.सं. 831)[2], जिसका अर्थ होता है- हमारे चारों ओर जो दिशाएं व्याप्त है, वह सभी स्थान। स्पेस डॉट कॉम (Space.com)[3], विकीपिडीया (Wikipedia)[4], चैटजीपीटी (Chatgpt)**5** आदि अन्तर्जाल स्त्रोत के अनुसार अंतरिक्ष एक ऐसा क्षेत्र है, जहां वायु का अस्तित्व नहीं है तथा जहां त्रिआयामी पिंड जैसे ग्रह, तारे, धूमकेतु, आकाशगंगा, कृष्ण विवर आदि विद्यमान हैं। संस्कृत ग्रंथों में अंतरिक्ष के लिए 'ब्रह्मांड' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका अर्थ होता है- ब्रह्म का अंडा। अंडा कहने का तात्पर्य अंडा जैसी वृत्तनुमा आकृति से है। वृत्तनुमा आकृति भी एक परिकल्पना है, क्योंकि ब्रह्मांड को किसी ने पूर्ण रुप से नहीं देखा है, क्योंकि यह अनन्त है, जिसे पूर्ण रुप से देखना संभव नहीं है। संभवतः ब्रह्मांड में विद्यमान अधिकांश पिंडों की वृत्तनुमा आकृति के कारण ही सामान्यतोदृष्ट अनुमान के द्वारा ब्रह्मांड को वृतनुमा (गोल) माना गया। छान्दोग्य उपनिषद् में सत्यकाम जाबाल के कथा में सृष्टि में जो कुछ भी उसे ब्रह्म का ही अंश माना गया है (व्यवहारिक जीवन में वेदान्त-स्वामी विवेकानंद-पृ.21-23)।[6] अत: ब्रह्म इस सृष्टि में विद्यमान वह सूक्ष्म ऊर्जा अथवा शक्ति है, जिससे सम्पूर्ण सृष्टि चलायमान है। इस प्रकार ब्रह्मांड वह स्थान है, जहां विभिन्न खगोलीय पिंड जैसे- ग्रह, तारे, धूमकेतु, आकाशगंगा, कृष्ण विवर इत्यादि विद्यमान है तथा किसी अज्ञात शक्ति के सहारे चलायमान है। अत: हम कह सकते है कि हम जहां विद्यमान है, उसके दशों दिशाओं में जो क्षेत्र है, वह अंतरिक्ष के अंतर्गत आता है; परन्तु आधुनिक विज्ञान में हमारे पृथ्वी के वायुमंडल के बाद का जो क्षेत्र अथवा स्थान है, उसे अंतरिक्ष कहां जाता है।

अंतरिक्ष विषयक मानवीय जिज्ञासा : अभी तक ज्ञात इस जगत में मानव ही एक ऐसा प्राणी है, जिसका बौद्धिक विकास हो पाया। अपने बौद्धिक कौतूहल के कारण मानव प्रारंभ से ही अपनी दृष्टि अंतरिक्ष की ओर जमाये रखा। अंतरिक्ष की ओर निरंतर देखने के कारण चन्द्र, तारे और सूरज की गतियों ने उसके भीतर समय के बोध को जागृत किया। विकास के क्रम में मनुष्य ने अलग-अलग स्थान पर अलग-अलग सभ्यता एवं संस्कृति का निर्माण किया; जैसे- सिन्धु घाटी सभ्यता, वैदिक सभ्यता, मिस्त्र की सभ्यता, मेसोपोटामिया की सभ्यता इत्यादि। इन सभी सभ्यताओं का अवलोकन करने पर हमें इनके भीतर अंतरिक्ष संबंधित ज्ञान का अस्तित्व प्राप्त होता है। सिन्धु घाटी सभ्यता के कुछ सिक्कों पर चन्द्र के निशान है, जो इस बात की ओर संकेत है कि उस समय के लोग आकाशीय पिंड में रुचि रखते थे।

मिस्त्र की सभ्यता में नील नदी के जल के बढने-घटने को तारा से जोड़कर देखा गया तथा कृषि की व्यवस्था के सिद्धांत को उस आधार पर प्रतिपादित किया गया। मेसोपोटामिया के सभ्यता में जिगुराट मंदिर देखने को मिलता है। यह मंदिर वस्तुत: अंतरिक्ष अध्ययन का केन्द्र हुआ करता था। भारत में अंतरिक्ष का व्यवस्थित अध्ययन हमें वैदिक सभ्यता में देखने को मिलता है। वैदिक वाङ्मय में वेदांगों के अंतर्गत हमें ज्योतिष नामक वेदांग प्राप्त होता है[7], जो मुख्यतः अंतरिक्ष अध्ययन से प्राप्त किये गये ज्ञान का संग्रह एवं उसके अनुप्रयोग पर आधारित था। ज्योतिष को वेद का चक्षु भी कहा जाता है।[8] कालांतर में आर्यभट्ट ने अपने आर्यभट्टीयम में खगोल संबंधित सिद्धांत को प्रतिपादित किया। वाराहमिहिर ने सूर्यसिद्धान्त की रचना कर अंतरिक्ष गवेषणा में अपना योगदान दिया। मध्य युग में विज्ञान की गति थोड़ी धीमी जरूर हुई, लेकिन यूरोप में पुनर्जागरण एवं धर्मसुधार आंदोलन ने विज्ञान की गति को और तेज कर दिया। स्वतंत्र चिन्तन ने मौलिक शोध को बढावा दिया, जिससे नये प्रकार के विज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ, जिसमें यंत्र की महत्ता बढती चली गयी। उन आधुनिक यंत्रों की सहायता से नये ढंग से अंतरिक्ष संबंधित शोधकार्य होने लगा। औपनिवेशिक शासन के कारण यूरोपीय ज्ञान-विज्ञान भारत को भी प्राप्त होने लगा। फलस्वरूप आजादी के पश्चात् भारत में भी यंत्रों की सहायता से अंतरिक्ष गवेषणा प्रारंभ हो गया। विभिन्न देशों ने अंतरिक्ष शोध के लिए संस्थान निर्मित किये। कुछ प्रमुख संस्थानों के नाम हैं- अमेरिका स्थित अंतरिक्ष संस्थान नासा है। यह संस्थान सम्पूर्ण विश्व में बहुत प्रसिद्ध है। रूस की अंतरिक्ष संस्थान का नाम रॉकस्कॉस्मॉस है। चीन के अंतरिक्ष संस्थान का नाम सी0एन0एस0ए0 है। यूरोपीय अंतरिक्ष संस्थान का नाम ई0 एस0 ए0 है। भारत के अंतरिक्ष संस्थान का नाम इसरो है। इसी प्रकार सम्पूर्ण विश्व में भिन्न-भिन्न देशों ने अपना अंतरिक्ष संस्थान बना रखा है तथा अंतरिक्ष के विषय में जानने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है।

अंतरिक्ष गवेषणा की आधुनिक विधि : आधुनिक समय में हो रहे अंतरिक्ष गवेषणा पर यदि दृष्टिपात करे तो हम पाते है कि विभिन्न प्रकार के कृत्रिम उपग्रहों की संरचना कर रॉकेट यान की सहायता से उस कृत्रिम उपग्रह को हम अंतरिक्ष में स्थापित कर रहे है। हमारे ग्रह पृथ्वी की डिजिटल संचार व्यवस्था भी अंतरिक्ष में स्थापित कृत्रिम उपग्रह पर भी निर्भर है। रक्षा क्षेत्र में भी कृत्रिम उपग्रह का सहायता लिया जाता है। शिक्षा में सुधार हेतु जो भिन्न-भिन्न टी0 वी0 चैनल के माध्यम से प्रसारण को प्रसारित किया जाता है वह भी कृत्रिम उपग्रह की सहायता से ही संभव हो पाया है। इसके अलावा हमने अंतरिक्ष में स्टेशन बना रखा है, जहां पर रूककर अंतरिक्ष वैज्ञानिक शोध कार्य करते है। कुछ ही समय पहले सुनिता विलियम कई महीनों बाद अंतरिक्ष स्टेशन से वापस लौटी। सुधांशु शुक्ला नामक अंतरिक्ष वैज्ञानिक अंतरिक्ष स्टेशन पर जाकर शोध कार्य कर वापस लौटे है। इस प्रकार मशीनों की सहायता से वर्तमान समय में अंतरिक्ष गवेषणा के कार्य को सम्पन्न किया जा रहा है।

अंतरिक्ष गवेषणा की यौगिक विधि : प्राचीन काल में अंतरिक्ष संबंधित किसी मशीन का वर्णन हमारे ऐतिहासिक एवं पौराणिक ग्रंथों में नहीं मिलता है। कुछ यान का वर्णन है जो आकाश मार्ग से चलता था; जैसे- रामायण में पुष्पक यान का वर्णन है जिसका मालिक धन का स्वामी कुबेर था; जिससे लंकेश रावण ने उस यान को छीन लिया था। कहां जाता है कि वह यान अपने स्वामी के आदेश के अनुसार अपना आकार बदलने में समर्थ था। रावण के मृत्यु के पश्चात राम अपनी सेना सहित अयोध्या उसी पुष्पक यान से गये थे। उस यान को चलाने के लिए किस प्रकार के इंधन का प्रयोग किया जाता था, इसका वर्णन नहीं मिलता है। लेकिन पुष्पक यान से भी अंतरिक्ष संबंधित गवेषणा का वर्णन नहीं मिलता है। आज मौसम संबंधित जानकारी प्रदान करने के लिए मौसम विभाग का गठन हो चुका है। मौसम विभाग द्वारा दी गई सूचना मौसम विज्ञान पर आधारित है, जिसके लिए कोई-न-कोई यंत्र उत्तरदायी होता है। लेकिन हमारा पंचांग सदियो पुराना है। उसमें जो गणना किया गया है वह कम या ज्यादा आज भी सहीं होता है। यह सोचकर

हमें आश्चर्य होता है कि पंचांग को बनाया कैसे गया। कोई भी यंत्र आज सामने नहीं है जो यह बता सके कि पंचांग बनाने में उसका सहायता लिया गया हो। ऐसी स्थिति में हम यह कह सकते है कि मानव मस्तिष्क में असीमित शक्ति विद्यमान है, जिसकी सहायता से असंभव सा लगने वाले कार्य को भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए हम किसी जादूगर के तमाशा को ले सकते है। कोई जादूगर हमें भिन्न-भिन्न प्रकार के तमाशा दिखाता है, जिस पर विश्वास करना लगभग असंभव हो जाता है। कोई जादूगर कुछ विशेष नहीं करता है, बल्कि हमारे मस्तिष्क को एक भ्रम की स्थिति में ला देता है; जिस कारण वह जो दिखाना चाहता है, वहीं हम देख पाते है। लेकिन जादूगर के पास हमारे मस्तिष्क को भ्रम में डालने की क्षमता होता है। प्रसिद्ध भौतिक वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन भी मानव मस्तिष्क की असीमित क्षमता के बारे में बोल चुके है। योगदर्शन परम्परा अपने सदियों के शोध से इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि जो कुछ भी इस सम्पूर्ण ब्रह्मांड में है वह सभी एक जीव के शरीर में है (यथा ब्रह्मांडे तथा पिण्डे)। आज क्वांटम भौतिकी के खोज से यह बात सिद्ध होता जा रहा है। अब परमाणु केन्द्र में आ गया है। एक जगत परमाणु से बड़ा है तो एक जगत परमाणु से छोटा है। परमाणु से बड़ा जगत भौतिकी का क्षेत्र है तथा परमाणु छोटा जगत क्वांटम भौतिकी का क्षेत्र है। परम अणु जैसा कोई चीज नहीं रह गया है क्योंकि परमाणु भी विखंडित हो चुका है, जिसका अनुप्रयोग परमाणु बम और परमाणु रियेक्टर बनाने में हो चुका है। परमाणु अब एक सीमा रेखा बनकर रह गया है जिसके एक तरफ भौतिकी है तथा दूसरी तरफ क्वांटम भौतिकी। क्वांटम भौतिकी की खोज ने यह सिद्ध किया कि जगत केवल परमाणु से बड़ी वस्तु तक ही सीमित नहीं बल्कि परमाणु से सूक्ष्म भी जगत का अस्तित्व है। योगदर्शन परम्परा में इस बात को बहुत पहले समझ लिया गया था। तभी तो वह कह पाया "यथा ब्रह्मांडे तथा पिण्डे।" ; अर्थात् जो कुछ भी इस ब्रह्मांड में है वहीं तत्व किसी प्राणी के शरीर में निहित है। आज के समय में शरीर का अर्थ केवल भौतिक शरीर समझा जाता है, जबकि वेदान्त दर्शन में शरीर को भी पांच भागों में बांटा गया है। वहां शरीर के लिए कोश शब्द का प्रयोग किया है। वेदांत दर्शन में वर्णित पांचों शरीर अथवा पांचों कोश का वर्णन इस प्रकार है- 1. अन्नमय कोश, 2. प्राणमय कोश, 3. मनोमय कोश, 4. विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश।[9] ये पांचो कोश अथवा शरीर क्रमश: सूक्ष्म होता चला जाता है। पहला अन्नमय कोश सबसे स्थूल और अंतिम आनन्दमय कोश सबसे सूक्ष्म शरीर है। परमेश्वर के लिए हमारी संस्कृति में सच्चिदानन्द शब्द का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ होता है- सत् , चित्त और आनन्द। सत् का अर्थ है सत्य अर्थात् जो पूर्ण रूप से मिथ्यारहित हो, चित् का अर्थ है चैतन्य अर्थात् चेतनायुक्त और आनन्द शब्द उसी अंतिम शरीर अथवा कोश की ओर संकेत करता है, जिसका वर्णन वेदान्त में किया गया है। परमेश्वर सच्चिदानंद है ये किसी ने कैसे जाना ? उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति स्वयं का अनुभव कर सकता है; दूसरे का अनुभव क्या है इस बात से वह हमेशा अनजान ही रहेगा। दूसरा क्यक्ति अपना अनुभव साझा भी करे तो भी उसे दूसरे व्यक्ति के अनुभव का साक्षात्कार नहीं होगा। वह समझेगा भी तो अपने अनुभव के आधार पर हीं समझेगा। ऐसी स्थिति यह प्रश्न उठता है कि परमेश्वर का स्वरुप सच्चिदानंद ही है यह कैसे समझा गया ? इस प्रश्न के उत्तर में कहां जा सकता है कि जिन्होंने भी यह बात कहीं कि परमात्मा सच्चिदानंद है, उन्हें किसी और का कोई अनुभव नहीं था, बल्कि उनकी अपनी अनुभूति थी उस शरीर के उस तल की जहां केवल आनन्द ही उपलब्ध था तथा जगत सभी प्राणियों के आनन्द प्राप्ति की चेष्टा ने इस परिकल्पना को जन्म दिया कि परमेश्वर का स्वरुप सच्चिदानंद है। इस प्रकार वेदान्त दर्शन में वर्णित आनन्दमय कोश का ही विस्तार सच्चिदानंद के रुप में हुआ। ये पांचों कोश क्रमश: जुडे हुए है। पहला अन्नमय कोश अन्न से पुष्ट होता है इसलिए उसका नाम अन्नमय कोश है। प्राणमय कोश प्राण अथवा वायु द्वारा संचालित होता है। अन्न से प्राप्त ऊर्जा को समग्र शरीर में प्राण द्वारा संचारित किया जाता है, जिसकी पुष्टि आधुनिक विज्ञान भी करता है। प्राण वायु का आधुनिक वैज्ञानिक नाम है आक्सीजन। आधुनिक विज्ञान भी इस बात को मानता है कि रक्त संचार की सहायता से आक्सीजन

ही उर्जा समस्त कोशिका तक पहुंचाता है। मन अन्न के हीं सूक्ष्मतम रूप से बनता है। छान्दोग्य उपनिषद् में कथा वर्णित है कि उद्दालक के अश्वकेतु सभी वेद-वेदांगों का अध्ययन करने के कारण दम्भ से भर गया तो उद्दालक ने अपने पुत्र के दम्भ को नष्ट करने के लिए उसे उपवास रखने के लिए कहां। कुछ दिनों के उपवास के बाद उद्दालक ने अपने पुत्र को सीखे गये ज्ञान का वर्णन करने के लिए कहां तो वह कुछ नहीं बता पाया। तब उसने अपने पुत्र को भोजन कराया तथा पुन: उसके ज्ञान के बारे में पूछा तो वह सभी प्रश्नों का उत्तर देने लगा। तब उद्दालक ने अपने पुत्र को समझाया कि याद किया हुआ ज्ञान असली ज्ञान नहीं होता है बल्कि अपने अनुभव प्राप्त ज्ञान हीं असली ज्ञान होता है। उसने अपने पुत्र से कहां कि भोजनरहित होकर तुम कुछ नहीं बता पाये लेकिन भोजनोपरांत सभी कुछ बताने लगे।[10] इससे यह सिद्ध होता है कि मन का निर्माण अन्न के सूक्ष्म तत्व से हुआ है। मनोमय कोश के बाद विज्ञानमय कोश का स्थान आता है। इस कोश के नाम से ही ज्ञात होता है कि मनुष्य को स्वयं के भीतर ज्ञान का अनुभव इसी कोश के ज्ञान से हुआ। इसी कोश के अनुभव ने मनुष्य के भीतर इस संकल्पना को जन्म दिया कि जो कुछ भी इस जगत में निहित वह सभी शरीर के अंदर भी निहित है। अन्तर्मुखी होकर यदि हम स्वयं के बारे में जान ले तो हम सम्पूर्ण ब्रह्मांड को जान लेंगे। मनुष्य के इस संकल्पना में अतिशयोक्ति हो सकता है, लेकिन यह संकल्पना पूर्ण रूप से गलत हो ऐसा नहीं हो सकता है। आधुनिक युग में भी इसके कई प्रमाण लोगों के सामने प्रत्यक्ष है। आधुनिक युग में 10 सितम्बर, 1899 को पोलैंड में जन्मे वोल्फ मेसी इसके सर्वोत्तम उदाहरण है। हमारे भारत ऐसे अनेक उदाहरण है। योग-सूत्र का एक अध्याय ही मनुष्य के अंदर निहित शक्तियों का वर्णन करता है। लेकिन सदियों के दासता के कारण भारत का अन्वेषण अविश्वसनीय बन कर रह गया है। वोल्फ मेसी 20वीं शताब्दी के एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने अपनी मानसिक शक्ति से लोगों की धारणा को प्रभावित किया। दुनिया में वोल्फ मेसी इसलिए प्रसिद्ध हुए क्योंकि उस समय के दुनिया के बड़े लोग जैसे हिटलर, स्टालिन आदि उनसे प्रभावित हुए थे।[11] योग-सूत्र के तीसरे अध्याय विभूति पाद के 26वें सूत्र में कहां गया है "भुवनज्ञानं सूर्ये संयमात्।" अर्थात् सूर्य में संयम करने से समस्त लोकों का ज्ञान हो जाता है।[12] इसी अध्याय के 27वें सूत्र में कहां गया है "चन्द्रे ताराव्यूह ज्ञानम्।" अर्थात् चन्द्रमा में संयम करने से सब तारों के व्यूह का ज्ञान हो जाता है।[13] 28वें सूत्र में कहां गया है "ध्रुवे तद्गतिज्ञानम्।" अर्थात् ध्रुव तारा में संयम करने से ताराओं की गति का ज्ञान हो जाता है।[14] श्री स्वामी ओमानन्द तीर्थ अपने पातंजल योगप्रदीप में भुवन ज्ञान का तात्पर्य भू, भुव: , स्व: आदि सात लोकों से मानते हैं।[15] संक्षिप्तता की दृष्टि से महर्षि पतंजलि ने थोड़े से शक्तियों के वर्णन किये है, परन्तु इनका विस्तार बहुआयामी हो सकता है। संभवत: प्राचीन भारत में अंतरिक्ष संबंधित अन्वेषण के लिए भी इन्हीं शक्तियों का प्रयोग किया गया हो। बहुत संभव है कि हमारा नक्षत्र संबंधित ज्ञान का आधार भी योग ही रहा हो क्योंकि अन्य कोई भी साधन उपलब्ध नहीं है।

निष्कर्ष : उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते है कि अंतरिक्ष संबंधित गवेषणा यौगिक विधि के द्वारा भी किया जा सकता है। प्राचीन भारतीय यौगिक विधि पर शोध की आवश्यकता है। यदि हम इस विधि को विकसित करने में सफल हो जाते है तो आधुनिक विज्ञान की दुनिया में एक नयी छलांग लगा सकते है। आधुनिक अंतरिक्ष शोध अत्यधिक आर्थिक व्यय पर आधारित है तथा उससे उत्पन्न कचरा पृथ्वी और अंतरिक्ष दोनों जगह फैलता जा रहा है, जिससे प्रकृति को हानि पहुंच रहा है। हमारे विकास के लिए वैज्ञानिक शोध आवश्यक है न कि हमारे विनाश के लिए। आधुनिक अंतरिक्ष शोध स्वच्छ शोध की श्रेणी में नहीं आता है। अंतरिक्ष विज्ञान में यौगिक विधि का प्रयोग हमें स्वच्छ शोध की ओर अग्रसर करेगा, जिसमें अत्यधिक आर्थिक व्यय और प्रकृति को नुकसान पहुंचाने वाले तत्व निहित नहीं होंगे।

संदर्भ ग्रंथों एवं अन्य स्त्रोतों की सूची :

1. आप्टे, वामन शिवराम- संस्कृत हिन्दी कोश- चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी-1890 ई0, पृ0 178.

2. बुल्के एस0 जे0, फादर कामिल- अंग्रेजी हिन्दी कोश- एस0 चन्द कैथलिक प्रेस, रांची- 2023 ई0, पृ0 831.
3. www.space.com
4. www.wikipedia.com
5. Chatgpt
6. स्वामी विवेकानंद- व्यवहारिक जीवन में वेदांत- -पृ0 21-23.
7. पाठक, डॉ. जमुना एवं सिंह, डॉ. उमेश प्रसाद - नवीनवैदिकसंचयनम् - चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी - 2005 ई0, पृ0 43.
8. उपरिवत, पृ0 48.
9. गोयन्दका, हरिकृष्ण दास - ईशादि नौ उपनिषद् - तैत्तिरीय उपनिषद्- गीताप्रेस गोरखपुर- पृ0 348-358.
10. छान्दोग्योपनिषद् - गीता प्रेस गोरखपुर
11. www.wikipedia.com
12. महर्षि पतंजलि; गोयनका, हरिकृष्ण दास- योग-दर्शन-गीताप्रेस, गोरखपुर- विभूति पाद, पृ0 85.
13. उपरिवत पृ0 86.
14. उपरिवत पृ0 86.
15. तीर्थ, श्री स्वामी ओमानन्द - पातंजलयोगप्रदीप- गीताप्रेस गोरखपुर - विभूति पाद पृ0 562.

•